भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक—साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

वर्ष : १५ अंक : ३७

सोमवार १६ जून, '६६

अन्य पृष्ठों पर

आम जनता की मुक्ति की क्रान्ति...
—जयप्रकाश नारायण ४५८

कन्सेंसस—आम राय :
कान्शंस—अंतरचेतना
—सम्पादकीय ४५९

स्नेहल दादा —गुरुशरण ४६०

पूरे बिहार के कार्यकर्ता विहारदान पूरा करने में सक्रिय
—कैलाश प्रसाद शर्मा ४६१

आन्दोलन के समाचार ४६४

परिशिष्ट
"गाँव की बात"

शास्त्रों का अर्थ अनेक लोग अनेक करते हैं। सीधा रास्ता यह है कि जो अर्थ हमें जँचे वही करें और उसके मुताबिक चलें, भले हमारा अर्थ व्याकरण से प्रतिकूल सिद्ध हो। शर्त यह है कि हमारा अर्थ नीति का विरोध न हो और हमको संयम की ओर ले जाता हो। —महात्मा गांधी

सम्पादक
राममूर्ति

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी-१, उत्तर प्रदेश
फोन : ४२८५

आम लोगों का असली शत्रु कौन है?

वर्ग-विग्रह का विचार मुझे अपील नहीं करता। भारत में वर्ग-विग्रह न सिर्फ अनिवार्य नहीं है, बल्कि वह परिहार्य भी है, यदि हमने अहिंसा का सन्देश समझ लिया है। जो वर्ग-विग्रह के अनिवार्य होने की बात करते हैं, उन्होंने अहिंसा के गूढ़ अर्थ नहीं समझा है या केवल ऊपर-ऊपर से ही समझा है।

हमें पश्चिम से आये हुए लुभावने नारों को अपने पर हावी नहीं होने देना चाहिए। क्या हमारी कोई स्वतंत्र पूर्वीय परम्परा नहीं है? क्या हम पूँजी और श्रम के प्रश्न का अपना ही हल नहीं खोज सकते? वर्णाश्रम-व्यवस्था ऊँच-नीच के भेदों और पूँजी तथा श्रम के भेदों के बीच सामंजस्य कायम करने का उपाय नहीं तो और क्या है? इस विषय में जो भी चीज पश्चिम से आती है, उस पर हिंसा का रंग चढ़ा हुआ होता है। मुझे उस पर आपत्ति इसलिए है कि मैंने वह बरबादी देखी है, जो अन्त में इस मार्ग पर चलने से होती है। आजकल पश्चिम के भी अधिक विचारशील लोग, जिस गहरी खाई की ओर यह प्रणाली तेजी से जा रही है, उसे देखकर स्तंभित रह जाते हैं। और मेरा पश्चिम में अगर कोई असर है, तो वह एक ऐसा हल ढूँढ़ने के मेरे सतत प्रयत्न के कारण है, जिसमें हिंसा और शोषण के कुचक्र से निकलने की आशा निहित है। मैं पश्चिम की समाज-व्यवस्था का सहानुभूतिपूर्ण विद्यार्थी रहा हूँ और मैंने यह बात पायी है कि पश्चिम का आत्मा जिस ज्वर से पीड़ित है, उसकी जड़ में सत्य की अविश्रान्त खोज है। मैं पश्चिम की इस भावना की कद्र करता हूँ। हमें अपनी पूर्वीय संस्थाओं का वैज्ञानिक खोज की उसी भावना से अध्ययन करना चाहिए। फिर हम एक ऐसे सच्चे समाजवाद और साम्यवाद का विकास कर लेंगे, जिसकी संसार ने अभी कल्पना भी नहीं की होगी।[1]

समस्या एक वर्ग को दूसरे वर्ग से भिड़ा देने की नहीं है, मगर मजदूरों को शिक्षा देकर अपने गौरव का भान कराने की है। आखिर तो धनवानों की संख्या संसार में आटे में नमक के बराबर ही है। ज्यों ही मजदूर अपनी ताकत को पहचान लेंगे और पहचानकर भी न्यायपूर्ण व्यवहार करेंगे, त्यों ही पूँजी-पतियों का व्यवहार भी न्यायपूर्ण हो जायगा। मजदूरों को धनवानों के विरुद्ध भड़काना वर्ग-द्वेष को और उससे होनेवाले सारे बुरे परिणामों को चिरस्थायी बनाना है। यह संघर्ष ऐसा कुचक्र है, जिसे हर कीमत पर टालना चाहिए। यह अपनी कमजोरी को कबूल करना है, अपने को हीन समझने की निशानी है। जिस क्षण मजदूर अपना गौरव पहचान लेंगे, उसी क्षण पैसे को अपना उचित स्थान मिल जायगा—अर्थात् वह मजदूरों के लिए घरोहर बन जायगा, क्योंकि श्रम पैसे से बड़ा है।[2]

मो. क. गांधी

(१) 'अमृत बाजार पत्रिका' : ३-८-'३४, (२) 'हरिजन' : १६-१०-'४५

आम जनता की मुक्ति की क्रान्ति अहिंसा से ही सम्भव

www.vinoba.in

स्वयंसेवी सेवा-संस्थाओं के राष्ट्रीय सम्मेलन में श्री जयप्रकाश नारायण की घोषणा

नयी दिल्ली, रविवार, ८ जून। नयी दिल्ली स्थित गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र में स्वयंसेवी (वालण्टरी) सेवा-संस्थाओं के अखिल भारतीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्री जयप्रकाश नारायण ने कहा कि यदि मुझे यकीन हो जाय कि हिंसा के बिना आम जनता की मुक्ति नहीं हो सकती तो मैं हिंसा का तरीका कबूल कर लूँगा।

स्वयंसेवी सेवा-संस्थाओं के जिस राष्ट्रीय सम्मेलन का श्री जयप्रकाश बाबू ने उद्घाटन किया, उसमें भारत की १२० से अधिक सेवा-संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे। यह सम्मेलन गांधी जन्म-शताब्दी-समारोह की जनसम्पर्क समिति की ओर से आयोजित था।

गांधी-शताब्दी वर्ष के दौरान भारत के सभी भागों में हिंसा का विस्फोट हो रहा है, इस पर अपना दुःख प्रकट करते हुए श्री जयप्रकाशजी ने कहा कि मैं हिंसा को इसलिए कबूल नहीं कर पाता, क्योंकि अन्ततः हिंसक क्रान्ति की परिसमाप्ति आम लोगों के प्रति विश्वासघात में होती है।

देश की वर्तमान परिस्थिति के प्रति अपना खेद प्रकट करते हुए श्री जयप्रकाशजी ने कहा कि स्वतंत्र होने के २२ वर्ष बाद भी बम्बई और कलकत्ता जैसे नगरों में लोग सूअरों जैसी जिन्दगी बिता रहे हैं और नालियों में से अन्न के दाने चुनकर खाते हैं! कानून और व्यवस्था के नाम पर यह अन्याय जारी रखा जा रहा है। उन्होंने कहा कि क्या कानून सिर्फ उस समय लागू होना चाहिए, जबकि वे गरीब और निराशोन्मत्त लोग उन खिड़कियों को तोड़ रहे हों, जिनके पीछे खाद्य पदार्थों का प्रदर्शन होता है? जब कि गरीब लोगों को बहुत मामूली-सा सामाजिक और आर्थिक न्याय भी नहीं मिल रहा है, तब वे हिंसा का सहारा लेने के अलावा और करेंगे भी क्या? आखिर गरीब लोग कितना धीरज रखें? श्री जयप्रकाशजी ने कहा—'यद्यपि नक्सालपंथी हिंसात्मक तरीका इस्तेमाल कर रहे हैं, फिर भी उनके साथ मेरी सहानुभूति है, क्योंकि वे लोग सामान्य-जन के लिए कुछ करना चाहते हैं। बिहार उनकी में सुविधा-सम्पन्न किसानों के रैयत को झोपड़ी वाली जमीन का अधिकार देनेवाला कानून सन् १९५० में ही पारित हो गया था, लेकिन निहित स्वार्थ के लोगों ने उस कानून को लागू नहीं होने दिया। बिहार में गैर-कांग्रेसी सरकार सत्तारूढ़ हुई, वह भी इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कर सकी।

'कांग्रेसी और गैर-कांग्रेसी सरकारों के काम को देखकर मेरी यह पक्की धारणा बन गयी है कि इस देश में अब कोई भी सरकार आज के लोकतंत्री तरीकों से प्रगतिशील सामाजिक क्रान्ति नहीं ला सकेगी। सच्ची सामाजिक क्रान्ति अहिंसक जन-सत्याग्रह और देशव्यापी रचनात्मक आन्दोलन से ही सम्भव है।' सत्याग्रह के ब्रह्मास्त्र का उल्लेख करते हुए श्री जयप्रकाशजी ने कहा कि इसके लिए बिना नैतिक औचित्य स्थापित किये और बिना आध्यात्मिक तैयारी या अनुकूल वातावरण बनाये भारत के राजनीतिक दल इसका हर मामले में फूहड़ ढंग से इस्तेमाल कर रहे हैं। इस प्रकार के इस्तेमाल से हमें सतर्क रहना चाहिए।

आज के लोकतांत्रिक ढंग से आम लोगों की समस्याएँ हल हो सकती हैं, इस पर अपनी गहरी शंका प्रकट करते हुए श्री जयप्रकाश बाबू ने कहा कि यदि लोकतांत्रिक पद्धति से लोगों की समस्याएँ हल न हुईं तो उनके सामने हिंसा का तरीका अपनाने के सिवा और कोई उपाय नहीं होगा। वस्तुतः राजनीतिक दायरे में भारत में एक अहिंसक सामाजिक क्रान्ति की आवश्यकता है। इस कार्य के लिए देश की स्वयंसेवी संस्थाओं का आह्वान करते हुए आपने उन्हें सुझाया कि वे लोगों के लिए होनेवाले रचनात्मक अहिंसक क्रान्ति के कार्यक्रमों के प्रति नैतिक शक्ति और सामाजिक पुष्टि की परिस्थिति पैदा करें। गांधीजी ने, जो स्वयं स्वयंसेवी कार्यक्रमों के मूर्तमान प्रतीक थे, इस अहिंसक ब्रह्मास्त्र यानी अहिंसक असहयोग का उपयोग केवल असाधारण अवसरों पर किया था।

दूसरे देशों में हुई हिंसक क्रान्तियों का विश्लेषण करते हुए श्री जयप्रकाशजी ने कहा कि हिंसा ने वहाँ की क्रान्ति को सफल नहीं किया। हिंसा ने पुरानी समाज-व्यवस्था को जड़ समेत जरूर उखाड़ फेंका, लेकिन जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए क्रान्ति शुरू हुई थी उसमें उसे सफलता नहीं मिली। उन्होंने अपने विचार स्पष्ट करते हुए कहा—'क्रान्ति के एक विद्यार्थी की हैसियत से मैं यह कह सकता हूँ कि हिंसक क्रान्ति से जो परिणाम सामने आये उनसे सत्ता आम लोगों के, जो अधिकार-वंचित थे, हाथों में नहीं आयी। फ्रांस की राज्यक्रान्ति ने नेपोलियन को सत्तारूढ़ बनाया। रूस में राज्य की सत्ता सोवियतों के हाथ में नहीं है। रूस में सिर्फ 'महल की क्रान्ति' हुई, अर्थात् आम जनता को सत्ता नहीं मिली। भीतर-ही-भीतर राजा की जगह पार्टी के नेता सत्ताधिकारी बन बैठे। चीन की क्रान्ति के मामले में क्या हुआ? माओ ने जब कहा कि बन्दूक की नली से सत्ता का जन्म होता है तो वे बहुत बेलाग बात कह गये, यह सही है। लेकिन चीन में बन्दूक की नली किसके हाथ में है? वहाँ बन्दूक की नली लोगों के हाथों में नहीं, माओ के उत्तराधिकारी लिन पियाओ के हाथों में है।'

श्री जयप्रकाशजी ने कहा कि क्रान्ति के बाद कोई-न-कोई समाज-व्यवस्था खड़ी करनी पड़ती है। क्रान्ति के दौरान जो लोग हिंसा के साधनों का नियंत्रण करते हैं, और क्रान्ति के नये अनुशासन को समाज पर लागू करते हैं, वे ही सत्ता के मालिक बन जाते हैं। अन्ततोगत्वा हिंसक क्रान्ति आम जनता के प्रति विश्वासघात में समाप्त होती है।

अंत में श्री जयप्रकाशजी ने कहा—'मैं हिंसा को अस्वीकार करता हूँ। क्योंकि वह सिर्फ अधूरी क्रान्ति तक ले जाती है। मैं लोगों के लिए सत्ता चाहता हूँ। अगर लाखों लोग एक विराट अहिंसक कार्यक्रम में शरीक होते हैं तो वह एक सामाजिक क्रान्ति होगी और अगर सिर्फ थोड़े-से लोग उसमें शरीक होते हैं तो वह थोड़े-से सत्ताधारियों की अदला-बदली की क्रान्ति होगी।'

—'दी टाइम्स आव् इंडिया' समाचार

अध्यात्मीय

कन्सेंसस—आम-राय :
कान्शंस—अंतश्चेतना

ग्रामदान आन्दोलन में आज तक हमारा ध्यान मुख्य रूप से ग्रामदान के विचार के लिए लोक-सम्मति प्राप्त करने पर रहा है। उसी लक्ष्य को सामने रखकर हमने प्रचार किया है और अभियान चलाये हैं। इसमें शक नहीं कि लोक-सम्मति हमें बहुत बड़े पैमाने पर मिली है, और मिलती जा रही है। इतने दिनों के बाद अब हम यह कहने की स्थिति में पहुँच गये हैं कि समाज का मन इस विचार के साथ है। यद्यपि ग्रामदान की व्यावहारिकता के बारे में अनेक लोगों के मन में तरह-तरह की शंकाएँ हैं, जो स्वाभाविक हैं, फिर भी इस विचार के लिए शुभ-कामना हर एक की है, विरोध किसीका नहीं है। हम मान सकते हैं कि ग्रामदान को 'कन्सेंसस' मिल गया है।

'कन्सेंसस', यानी क्या? समर्थन, या इससे कुछ अधिक? हम किसी व्यक्ति, विचार, या कार्यक्रम का समर्थन करते हैं, इसका यह अर्थ नहीं है कि हमने प्रत्यक्ष कुछ करने की भी जिम्मेदारी मान ली है। यह जरूरी नहीं है कि समर्थन में समर्थन करनेवाले पर किसी तरह की व्यावहारिक जिम्मेदारी भी है। लेकिन सम्मति समर्थन से भिन्न है। सम्मति में शरीक होने का भाव है। सम्मति में सम्मति देनेवाले की कुछ व्यावहारिक जिम्मेदारी भी होती है। इस दृष्टि से ग्रामदान को समाज का जो कन्सेंसस मिला है, वह समर्थन है या सम्मति? दोनों है, या दोनों नहीं है? या, यह माना जाय कि आम-तौर पर समर्थन है, लेकिन कुछ क्षेत्र और व्यक्ति ऐसे भी हैं जिन्होंने सम्मति दी है, सिर्फ समर्थन नहीं। जरूर कुछ मिली-जुली स्थिति होगी। राज्यदान या जिलादान के बाद यह हमारा पहला काम है कि हम सम्मति के व्यक्तियों और क्षेत्रों को ढूंढ़ें और उनकी सम्मति को सक्रिय बनाकर, सहयोग और जिम्मेदारी के रास्ते पर आगे बढ़ायें।

राज्य-दान हो जाने पर कार्यकर्ता का रोल बदल जाता है। राज्य-दान प्राप्त करने में कार्यकर्ता मुख्य था, लेकिन प्राप्त होते ही वह गौण बन जाता है। उसकी जगह मुख्य स्थान उन नागरिकों का हो जाता है जिन्होंने ग्रामदान के विचार का केवल समर्थन नहीं किया, बल्कि उसके लिए अपनी स्पष्ट सम्मति दी। कार्यकर्ता का स्थान मुख्य हो या गौण, वह क्रान्ति का वाहन बनने की जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकता। वाहन बनने का गौरव और उत्तरदायित्व, दोनों उसका रहेगा। कार्यकर्ता में क्रान्ति का वाहन बनने की क्षमता और तत्परता बनी रहनी चाहिए। बनी ही नहीं, निरंतर बढ़ती रहनी चाहिए। कार्यकर्ता वाहन नहीं बनेगा तो नागरिक को सक्रिय नहीं कर सकेगा।

कार्यकर्ता की पात्रता का एक प्रमाण है समाज का कन्सेंसस प्राप्त करने की उसकी क्षमता। इतना ही काफी नहीं है। क्रान्तिकारी का व्यक्तित्व क्रान्ति की 'कान्शंस' है। प्रश्न उठता है कि जिस तेजी के साथ आन्दोलन के कन्सेंसस-पक्ष का विकास हुआ है, क्या उसी तेजी के साथ कान्शंस-पक्ष का भी विकास हुआ है? अगर नहीं तो क्यों? हम बराबर कहते आये हैं कि हमारा आन्दोलन आध्यात्मिक है। लेकिन सिर्फ कहने से क्या होगा? आध्यात्मिकता की कसौटी कन्सेंसस से अधिक कान्शंस से है। अगर किसी आन्दोलन का कान्शंस-पक्ष कमजोर हो तो वह एक मंजिल से दूसरी मंजिल पर नहीं पहुँच सकेगा, और बावजूद सारी ऊँची मान्यताओं और घोषणाओं के आन्दोलन सामाजिक शक्ति नहीं बन पायेगा। सामाजिक शक्ति के बिना क्रान्ति को सफलता का कोई आधार नहीं रह जाता।

इसमें शक नहीं कि पिछले अठारह वर्षों में हमारे अनेक साथियों ने सातत्य का असाधारण परिचय दिया है। उसीका परिणाम है कि हम ग्रामदान-विचार के लिए इतना कन्सेंसस इकट्ठा कर सके। लेकिन अब समय आ गया है कि हम कान्शंस की ओर ज्यादा ध्यान दें। क्रान्तिकारी जब क्रान्ति की बात करता है तो समाज स्वयं क्रान्तिकारी को उसकी घोषित क्रान्ति का प्रतीक मान लेता है। प्रतीक वास्तव में वह है भी, क्योंकि क्रान्तिकारी कम-से-कम अपनी निष्ठाओं और भावनाओं में प्रचलित समाज का सदस्य नहीं रह जाता। वह रहता है समाज में, लेकिन श्मशान के शिव की तरह रहता है—अपने साथियों के साथ ताण्डव के लिए सदा तत्पर। क्रान्ति क्रान्तिकारी में मूर्तिमान होती है। यह नहीं है कि ऐसे 'शिव' हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन यह मान लेने में कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि उनकी संख्या अत्यन्त सीमित है। शिव के व्यक्तित्व में लोकहित के प्रति जो समर्पण है, सत्ता और सम्पत्ति के विषैले साँपों से खेलनेवाली जो विद्रोह-शक्ति है, वह हमारे बीच अभी उतनी नहीं है जितनी होनी चाहिए। इस कमी की ओर हमारा ध्यान जाना चाहिए, और जहाँ तक हो सके दूर करने की कोशिश करनी चाहिए। हमारी बौद्धिक क्षमता, हमारा नैतिक स्तर, हमारी क्रान्ति-निष्ठा, आदि सबमें कमियाँ हैं जो आन्दोलन के कान्शंस-पक्ष को सुदृढ़ करने की दृष्टि से शीघ्र दूर होनी चाहिए। आँखों से देखकर, और कानों से सुनकर, कभी-कभी ऐसा लगने लगता है जैसे हमारे साथी क्रान्ति के बोझ से दबे जा रहे हैं, और वे जिस क्रान्ति का नाम ले रहे हैं उससे स्वयं भयभीत हो उठे हैं। वे क्रान्ति का काम करते जा रहे हैं, किन्तु क्रान्तिकारी बनने को तैयार नहीं हैं। यह स्थिति क्रान्ति के लिए शुभ नहीं है। क्रान्ति का जो चित्र विनोबा ने समाज के सामने रखा है, उसके लिए क्रान्तिकारी चाहिए जो शिव की तरह विद्रोह-शक्ति का प्रतीक बनकर जनता को तांडव के लिए तैयार कर सके। ऐसी क्रान्ति का काम मात्र कार्यकर्ता से कैसे चलेगा? हमें क्रान्तिकारी और कार्यकर्ता का अंतर समझना चाहिए।

राज्यदान का अर्थ है सैनिक-शक्ति के मुकाबिले नागरिक-शक्ति का तैयार होना। बापू ने लोकतंत्र के विकास में सैनिक-शक्ति और नागरिक-शक्ति के बीच जिस टक्कर की कल्पना सन् १९४८ में की थी, उसके दिन सन् १९६९ में राज्यदान के साथ आ गये दीखते हैं। हम अब अपनी 'कान्शंस' को जरा टटोल लें।•

स्नेहल दादा

www.vinoba.in

१८ जून, १८९९ को ग्राम मूलतापी, जिला बैतूल (म० प्र०) में जन्मे श्री शंकर त्र्यंबक धर्माधिकारी आज दादा धर्माधिकारी के नाम से जाने-माने जाते हैं। उनके पिता श्री टी०डी० धर्माधिकारी तदकालीन सी०पी० और बरार प्रान्त में 'एडीशनल डिस्ट्रिक्ट सेशन जज' थे। श्री शंकर उनकी पहली सन्तान होने के नाते सहज ही छोटे भाई-बहनों द्वारा दादा के नाम से सम्बोधित किये जाने लगे। कालान्तर में जब वे केवल अपने घर के न रहकर सबके हो गये तो सब लोग उनको दादा के नाम से पुकारने लगे। इस प्रकार अब स्नेह द्वारा प्रदत्त नाम दादा धर्माधिकारी ही उनका जान-पहचान का नाम हो गया है।

क्रिश्चियन कालेज, इन्दौर और मोरिस कालेज, नागपुर में इण्टरमीडियट के द्वितीय वर्ष तक उनका स्कूल-शिक्षण हुआ। बिना परीक्षा के दिये ही वे गांधीजी के असहयोग आन्दोलन में शामिल हो गये। उसके बाद फिर कभी कालेज-शिक्षण की ओर प्रवृत्त नहीं हुए। लेकिन ज्ञान, चिन्तन और मनन की दृष्टि से आज ७० वर्ष की अवस्था में भी उनका स्वाध्याय सतत चलता रहता है। उनका स्वाध्याय स्वयं के अध्ययन के साथ दूसरों के अध्ययन के लिए भी होता है। कुछ नहीं तो कम-से-कम एक दर्जन से अधिक ही उनकी छोटी-बड़ी डायरीनुमा नोटबुक्स रहती हैं, जिनमें वे सार की बातें लिख लिया करते हैं। उनके निजी पुस्तकालय में देश-विदेश के लब्धप्रतिष्ठित विद्वानों की बड़ी-बड़ी पुस्तकें विधिवत् कागज चढ़ी हुई उनके आने और पढ़ चुकने की तिथि के साथ आज भी रखी हुई मिलेंगी। उन्होंने एक वर्ष तक नियमित रूप से वेदान्त साहित्य का विधिवत् अध्ययन किया। उनकी बुद्धि बड़ी ही प्रखर और स्वभाव बड़ा ही मृदु है। ज्ञान का अहंकार तो रंच मात्र भी नहीं है। वे आज जीवित-जाग्रत विश्वविद्यालय-सरीखे हो गये हैं।

दादा भारतीय संस्कृति के नवनीत-स्वरूप गार्हस्थ्य-संस्कृति के आरम्भ से ही समर्थक रहे हैं। उनका विवाह गांधीजी के आन्दोलन में पड़ने से पूर्व ही दमयन्तीबाई से हुआ और उन्होंने उनकी समाज-सेवा के आरम्भिक काल में कन्धे-से-कन्धा मिलाकर साथ दिया। श्रीमती दमयन्तीबाई ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया और दो बार जेल गयीं। समाज-सेवा में लगे सच्चे सेवक अपने को एक जगह बिलकुल बाँधकर नहीं रख सकते। उसका क्षेत्र आंगन और पड़ोस से बढ़कर राष्ट्र और उससे भी आगे समूचे मानव-जगत् तक हो जाता है।

वे सन् १९२१ से १९३५ तक प्रदेश की सर्वोपरि राष्ट्रीय संस्था तिलक विद्यालय में अध्यापक रहे। सन् १९३५ में गांधी-सेवा-संघ

दादा धर्माधिकारी : स्नेह का दर्शन

के काम से बजाजवाड़ी, वर्धा रहने लगे। राष्ट्रीय स्वतंत्रता-संग्राम के आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया और कई बार जेल गये। सन् १९३८ से १९४२ तक श्री काका कालेलकर के साथ गांधी-सेवा-संघ के मुखपत्र 'सर्वोदय' हिन्दी मासिक का सम्पादन किया। सन् १९४६ और '४७ में सबके बहुत कहने-सुनने पर और गांधीजी द्वारा अनुमति दिये जाने के बाद प्रान्तीय धारासभा नागपुर और 'कान्स्टीट्युएण्ट असेम्बली' दिल्ली के सदस्य रहे। एक राज्य के राज्यपाल बनने को भी कहा गया, पर उन्होंने उसे छोड़ 'सर्वोदय' हिन्दी मासिक का सम्पादन-कार्य सम्हाला और धीरे-धीरे सत्ता की राजनीति से सदा-सदा के लिए अलग हो गये।

जिसने दादा को सार्वजनिक सभाओं में सुना, वह उनकी वक्तृत्वकला से बिना प्रभावित हुए रह नहीं सका। उनकी वाणी में अजीब जादू है। उनको देश-विदेश के अनेक विद्वानों के अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू और मराठी में ढेरों उद्धरण कंठस्थ हैं; जो भाषण के बीच-बीच में नगीने की तरह जड़े रहते हैं। छोटी मिल-बैठ गोष्ठियों में भी दादा की फबतियाँ गजब की रहती हैं! गांधीजी के देहावसान के बाद सेवाग्राम में पहला रचनात्मक कार्यकर्ता-सम्मेलन आयोजित हुआ तो विनोबाजी ने अपने को बापू का पाला हुआ बताया। दादा तुरन्त कह उठे, 'बापू के पाले हुए होकर भी पालतू नहीं हैं!' उनका शब्द-चयन अद्वितीय है। उनकी हिन्दी-अंग्रेजी में कई पुस्तकें हैं, जिनमें 'सर्वोदय-दर्शन', 'स्त्री-पुरुष सहजीवन', 'मानवीय क्रान्ति', 'क्रान्ति का अगला कदम' विशेष रूप में प्रसिद्ध हैं। उनका साहित्य विविधताओं का निकाय है।

वे स्वयं किसी भी आश्रम में नहीं रहे; बापू, विनोबा या अन्य किसी महान व्यक्ति के दायरे में नहीं रहे। कोई रचनात्मक और विधायक कार्य नहीं किया, फिर भी खुद में एक आश्रम बन गये। आज सभी छोटे-बड़े सर्वोदय-कार्यकर्ताओं के लिए वे उलझी-से-उलझी समस्याओं की 'डिक्शनरी' हो गये हैं। इस ७० वर्ष की आयु में दादा अपने अगाध स्नेह से सर्वोदय-परिवार को सिक्त करते रहते हैं। भगवान हमारे ऊपर यह कृपा दादा के प्रत्यक्ष स्नेह-रूप में वर्षों-वर्षों तक बरसाता रहे, ऐसी हमारी हार्दिक प्रार्थना है!

— गुरुशरण

लोकतंत्र : विकास और भविष्य

लेखक : आचार्य दादा धर्माधिकारी

बिहार के राज्यस्तरीय कार्यकर्ता-शिविर राँची में प्रस्तुत लोकतंत्र के ऐतिहासिक विकास का संदर्भ और भविष्य की सम्भावनाओं का शोधपूर्ण अध्ययन। मूल्य : २ रु०।

सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी-१

www.vinoba.in

पूरे बिहार के कार्यकर्ता बिहारदान के शेष काम को पूरा करने में सक्रिय

एक अप्रैल '६९ को पटना में बिहार ग्रामदान-प्राप्ति समिति की बैठक में बाबा ने देश एवं दुनिया की परिस्थिति की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए बिहारदान के संकल्प को अब शीघ्र ही पूरा करने का आह्वान किया था। सभी राजनैतिक पक्षों को तीन सप्ताह के लिए एकसाथ जुटकर बाकी जिलों के काम को पूरा करने का सुझाव भी दिया था। उस समय निर्णय लिया गया कि ७ मई से ३१ मई तक बिहारदान का अन्तिम अभियान चलाया जाय। इस निर्णय के अनुसार योजना बनायी गयी। पटना, भागलपुर, संताल परगना एवं पलामू में पहले से अभियान चालू था, उसकी गति तीव्रतर करने का प्रयास किया गया। शाहाबाद, हजारीबाग, सिंहभूम एवं राँची में अभियान चलाने की योजना बनी। एक-एक वरिष्ठ कार्यकर्ता को एक एक जिले की जिम्मेदारी सौंपी गयी। जिलों में सरकारी अधिकारियों, शिक्षकों, राजनैतिक एवं अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओं की बैठकें जिले एवं प्रखण्ड-स्तर पर संयोजित की गयीं। बैठकें हुईं भी, सरकारी अधिकारी एवं शिक्षक लगे भी; किन्तु ३१ मई को बिहारदान सम्पन्न नहीं हो सका। यदि बाबा के सुझाव के मुताबिक सभी एकसाथ तीन सप्ताह के लिए लग जाते, तो कोई कारण नहीं था कि बिहारदान नहीं सम्पन्न होता।

सर्वोदय या खादी के कार्यकर्ता, जो मुख्यतः लगातार वर्षों से ग्रामदान-आन्दोलन में लगे हैं, उनका इन जिलों में नितान्त अभाव है, अतः शिक्षक, सरकारी अधिकारी एवं राजनैतिक पक्षों के कार्यकर्ताओं पर ही भरोसा करना था। राजनैतिक पक्षों की जितनी सहानुभूति है, उतनी ही यदि मदद होती तो काम बहुत आगे बढ़ गया होता। सरकारी अधिकारी अपने कर्मचारियों के साथ लगने को तत्पर अवश्य हुए, किन्तु उनके साथ सरकार के जो अन्य सारे काम लगे हुए हैं, उनसे अपने को अलग कर सिर्फ ग्रामदान के काम में ही वे नहीं लग सके। शिक्षक कुछ दिन लगे, फिर उनकी छुट्टियाँ हो गयीं। मई का महीना शादी-ब्याह का मुख्य महीना था, इसके कारण अन्य दूसरे लोग भी शादी-ब्याहों में ही व्यस्त रहे। कुछ वरिष्ठ कार्यकर्ता भी, जिन पर जिलों का भार सौंपा गया था, समय पर पहुँच नहीं सके। कुल मिलाकर फल यही हुआ कि मई माह तो तैयारी में ही बीत गया। इसी बीच सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री जगन्नाथनजी एवं मंत्री श्री ठाकुरदासबंग राँची में बाबा से मिलने आये। उन लोगों ने सारी परिस्थिति का अध्ययन कर बाबा से निवेदन किया कि जोर लगाने से ३० जून तक बिहारदान सम्पन्न हो जायेगा।

निश्चय ही अब इस संकल्प में सर्व सेवा संघ भी सम्मिलित हुआ है। बिहार के बाहर से करीब २४ वरिष्ठ मित्रों को बिहारदान-अभियान में शामिल होने के लिए कम-से-कम तीन सप्ताह का समय निकालकर आने के लिए लिखा गया है। सर्वश्री निर्मलाबहन, दयानिधि पटनायक, नरेन्द्र दुबे, महेन्द्र कुमार, गंगा प्रसाद अग्रवाल पहुँच गये हैं। प्रोफेसर बंग साहब एवं आचार्य राममूर्तिजी ने ६-६ दिनों का समय दिया है। जयप्रकाश नारायण एवं ढेबर भाई के दौरे पटना, भागलपुर, संतालपरगना, राँची, हजारीबाग एवं शाहाबाद जिले में हुए हैं, जिससे हवा काफी अनुकूल बनी है। कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ा है। ध्वजा बाबू ने बिहार के उन जिलों से, जिनका जिलादान हो गया है, ६०० कार्यकर्ताओं को आह्वान किया है, क्योंकि ऐसा महसूस हुआ है कि जबतक सभी प्रखण्डों में कम-से-कम दो-तीन भी सर्वोदय या खादी के कार्यकर्ता नहीं रहेंगे, तबतक सरकारी अधिकारियों एवं शिक्षकों का उपयोग व्यवस्थित ढंग से नहीं हो सकेगा। कार्यकर्ता आने लगे हैं। ५ मई '६९ तक अभियान की स्थिति निम्न प्रकार है :

शाहाबाद : श्री जयप्रकाशजी का तीन दिनों का दौरा हुआ है। दो दिनों का दौरा मुख्यतः अर्थ-संग्रह के लिए हुआ था। ग्रामदान-सम्बन्धी आम सभाएँ भी हुई थीं। इन सभाओं में कुल १७,१५१.०० रुपये की थैली समर्पित की गयी। जे० पी० की उपस्थिति में एक दिन सरकारी अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की बैठक हुई, और आगे की योजना बनी है। प्रजा-समाजवादी पार्टी के नेता एवं भूतपूर्व उद्योग-मंत्री श्री बसावन सिंह ने अपने १०० कार्यकर्ताओं के साथ उस जिले में लगने का आश्वासन दिया है। श्री गोविन्दराव देशपांडे से इस जिले में तीन सप्ताह का समय देने का अनुरोध किया गया है। वे १० जून को वहाँ पहुँच रहे हैं। बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ के मंत्री श्री रमापति चौधरी एवं बिहार गांधी जन्म-शताब्दी समिति के सहमंत्री मथुराप्रसाद सिंह इस जिले के अभियान में वेग देने पहुँच गये हैं। उनके साथ कार्यकर्ताओं की भी अच्छी जमात पहुँची है। पहले से इस जिले में सर्वश्री हरिकृष्ण ठाकुर, रामेश्वर राय, देवसिंह शर्मा, विष्णुदेव मिश्र अपने अन्य साथियों के साथ लगे हुए हैं। इस जिले में कुल ४१ प्रखण्ड हैं, जिनमें ३४ अभी बाकी हैं।

पटना : पटना में श्री विद्यासागर भाई के नेतृत्व में एक साल से काम प्रारम्भ था, किन्तु पटना का 'पटना' मुश्किल हो रहा था। अब ३१ मई को जिलादान सम्पन्न हो गया, जिलाधिकारी, प्रखण्ड विकास-पदाधिकारियों, शिक्षा-पदाधिकारियों, शिक्षकों एवं पटना जिले के सर्वोदय-कार्यकर्ताओं की मदद से। दरभंगा और मुजफ्फरपुर के सर्वोदय-कार्यकर्ता भी पहुँच गये थे।

पलामू : सिर्फ ७ प्रखण्ड बाकी हैं। इस जिले के जिलादान में देर अवश्य हो रही है। सन् १९६७ के अकाल के गाल से निकलने के बाद बिहार के अन्य कोने तो हरे-भरे हो गये, किन्तु पलामू से अकाल की छाया अभी गयी नहीं है। इस कारण भी कुछ व्यवधान पड़ रहा है। सर्वश्री स्वामी सत्यानन्द, कमलदेव नारायण, परमेश्वरीदत्त झा, सुरेन्द्र भगत, विश्वनाथ झा के साथ-साथ खादी-बोर्ड और बि० खा० ग्रा० संघ के कार्यकर्ता लगे हुए हैं। अभी-अभी इस जिले में ४ दिनों का बंग साहब का दौरा हुआ है। उनके लिए यह

जिला काफी परिचित है। जून तक इस जिले का जिलादान अवश्य हो जायेगा, ऐसा दीखता है।

www.vinoba.in

भागलपुर : पिछले दिनों ढेबर भाई का बिहारदान के सिलसिले में दौरा हुआ था तो एक रोज का समय भागलपुर को भी उन्होंने दिया था। उस अवसर पर चार प्रखण्डदान समर्पित किये गये। भागलपुर में ३ प्रखण्ड बाकी हैं, सिर्फ उन्हींके कारण जिलादान घोषित नहीं हो पा रहा है। उम्मीद है कि दो हफ्ते में भागलपुर का जिलादान सम्पन्न हो जायेगा। सर्वश्री डा० रामजी सिंह, जागेश्वर मंडल, रघुवंश सिंह, नागेश्वर सेन, साकेत बिहारी अपने मित्रों के साथ लगे हैं। मुंगेर के श्री गिरिधर बाबू इस जिले में पहुँचकर सक्रिय रूप से सहयोग कर रहे हैं।

संताल परगना : इस जिले में ४१ प्रखंड हैं। कुल १६ प्रखंडों का दान हुआ है। २७ मई से ३१ मई तक आचार्य राममूर्ति भाई का जिले में दौरा हुआ, २९ मई को ढेबर भाई भी गये थे। उन्हें ४ प्रखंड समर्पित किये गये। जिले के कर्मठ नेता मोती बाबू बीमार पड़ गये हैं, किन्तु प्राकृतिक चिकित्सालय से ही सारे अभियान का संचालन कर रहे हैं। सर्वश्री लखी भाई, रतनेश्वर झा, अनन्त शर्मा, काशीनाथजी अन्य प्रमुख साथियों के साथ लगे हैं। सरकारी कर्मचारियों एवं शिक्षकों का सहयोग मिल रहा है। जिले की हूल झारखंड पार्टी अभी अनुकूल नहीं हुई है, जिसके कारण कुछ व्यवधान हो रहा है। प्रान्त के वरिष्ठ नेता श्री ब्रजमोहन शर्मा बाबा के आदेश पर जिलादान के अभियान में वेग देने मुंगेर से पहुँचे हुए हैं।

हजारीबाग : इस जिले में अभी ३४ प्रखण्ड शेष हैं। श्री ढेबरभाई के दौरे के समय एक प्रखण्डदान समर्पित किया गया है। शिक्षकगण मई मास तक बड़ी मुस्तैदी से लगे थे। अब वे छुट्टी में चले गये हैं। सरकारी कर्मचारी तत्पर हैं। दूसरे जिलों से सर्वोदय एवं खादी-कार्यकर्ता पहुँच रहे हैं। आशा है, गाड़ी निश्चित रूप से आगे बढ़ेगी। सर्वश्री रामनन्दन बाबू, श्यामप्रकाशजी, रामनारायण सिंह, फूलमान शर्मा, कैलाश सिंह अपने मित्रों के साथ लगे हुए हैं। भूदान-कमिटी एवं खादी-बोर्ड के कार्यकर्ता भी बड़ी मुस्तैदी से काम में लगे हुए हैं।

सिंहभूम : बिहार के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री भाई गोखले संयोजन हेतु यहाँ पहुँचे हैं। उनकी मदद में पंजाब से श्री दयानिधि पटनायक अपने सात मित्रों के साथ पहुँच गये हैं। श्री घूरन झा अपने मधुबनी के कार्यकर्ता मित्रों के साथ पहुँचनेवाले हैं। महाराष्ट्र के श्री गंगा प्रसाद अग्रवाल भी इसी जिले में लगे हैं। बिहार सरकार के भूतपूर्व राज्य-मंत्री एवं बिहार कांग्रेस कमिटी के मंत्री श्री नवल किशोर सिंह ने तीन सप्ताह का समय बिहारदान-अभियान में दिया है। १० दिनों के लिए सिंहभूम जिले का दौरा वे कर रहे हैं। इनके पहुँचने से राजनैतिक नेताओं में सक्रियता हुई है। श्री मनमोहन भाई का समय भी ५ दिनों के लिए मिला है। उनके समय का उपयोग इस जिले में किया जा रहा है। इस जिले में २७ प्रखण्ड बाकी हैं। सर्वश्री दिवाकर मिश्र, अयूब खाँ, रामसेवक शर्मा, मन्नान खाँ, रामनाथ सिंह अपने मित्रों के साथ लगे हैं। भाई श्याम बहादुरजी का अभाव खटक रहा है, जिनका वर्षों का सम्बन्ध इस जिले से रहा है। दुर्घटना के बाद वे अभी भी पूर्ण स्वस्थ नहीं हो सके हैं।

राँची : राँची, सिंहभूम संतालपरगना एवं पलामू का कुछ अंश पूर्ण रूप से आदिवासी क्षेत्र है। इसके साथ-साथ इन क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियों का भी अच्छा काम हुआ है, उसका व्यापक प्रभाव भी है। सर्वोदय या खादी के कार्यकर्ताओं में आदिवासी कार्यकर्ता नगण्य है। इस कारण उनके बीच पहुँचने में कठिनाई हो रही है। फिर भी इन क्षेत्रों में कार्यकर्ता जुट गये हैं। राँची जिला ही एक ऐसा जिला है, जहाँ एक भी प्रखण्डदान नहीं हुआ था। ६ जून '६९ को पहला प्रखण्डदान 'बोलवा' सम्पन्न हुआ है। प्रखण्डों की संख्या भी यहाँ सब जिलों से अधिक है। कुल ४३ है। बाबा नित्य प्रखण्डदान की राह देख रहे हैं। जे० पी० की एक आमसभा राँची में हुई थी, खूँटी सबडिवीजन में होनेवाली है। ढेबरभाई का भी दौरा इस जिले में हुआ। वातावरण धीरे-धीरे अनुकूल होता जा रहा है। बाहर से कार्यकर्ता मित्र भी पहुँचने लगे हैं। गुमला अनुमंडल के संयोजन का भार सर्वश्री नरेन्द्र दुबे एवं महेन्द्र कुमार पर सौंपा गया है। खूँटी में सहरसा जिले से महेन्द्रभाई अपने मित्रों के साथ पहुँच गये हैं। बिहार ग्रामदान-प्राप्ति समिति का कैम्प कार्यालय राँची पहुँच गया है। यहाँ से पूरे छोटानागपुर डिवीजन के काम का संयोजन हो रहा है। विशेष रूप से राँची जिलादान-अभियान में प्रान्तीय दफ्तर सक्रिय है। वैद्यनाथ बाबू २ मई से ही राँची में रुके हैं। उनके स्वास्थ्य को देखते हुए बाबा ने राँची में उन्हें रोक रखा है। उनके कहीं भी बाहर जाने पर बाबा ने जबरदस्त रोक लगा दी है। फिर भी वे बैठे-बैठे सारे बिहारदान का संयोजन कर रहे हैं। सर्वश्री ध्वजा बाबू, गोपाल बाबू, जयलोक बाबू, निर्मल भाई, सरयू बाबू आदि प्रान्तीय नेतागण भी इन क्षेत्रों में दौरा कर रहे हैं।

राँची, ६-६-'६९ —कैलाश प्रसाद शर्मा,
सहमंत्री, बिहार ग्रामदान प्राप्ति समिति

प्रखण्डदान

भूदान से ग्रामदान, और ग्रामदान से प्रखण्डदान। प्रखण्डदान क्या है, उसमें क्या क्या सम्भावनाएँ हैं, गाँव की जनता के लिए पुरुषार्थ और उद्यम के कौन-कौन से क्षेत्र खुलते हैं और इसमें सरकार का सहयोग किस रूप में मिल सकता है आदि बातों का विस्तृत विवेचन इस पुस्तक में संकलित है।

देश तो आजाद हो गया, पर अभी तक ग्राम-स्वराज्य नहीं आया है। ग्राम-स्वराज्य के बिना भारत के गाँव सुखी नहीं हो सकते।

प्रखण्डदान की सर्वाङ्ग जानकारी इस पुस्तक में पढ़िये और नवसमाज के निर्माण का सूत्रपात प्रखण्डदान से कीजिये।

लेखक : विनोबा मूल्य : एक रुपया

सर्व सेवा संघ-प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी—१

www.vinoba.in

तत्त्वज्ञान

भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को दी गयी फांसी तथा गणेश शंकर विद्यार्थी के आत्म-बलिदान के प्रसंगों से क्षुब्ध करांची-कांग्रेस-अधिवेशन के लोगों को सम्बोधित करते हुए २६ मार्च १९३१ को गांधीजी ने कहा था :—

"जो तरुण यह ईमानदारी से समझते हैं कि मैं हिन्दुस्तान का नुकसान कर रहा हूँ, उन्हें अधिकार है कि वे यह बात संसार के सामने चिल्ला-चिल्लाकर कहें। पर तलवार के तत्त्वज्ञान को हमेशा के लिए तलाक दे देने के कारण मेरे पास अब केवल प्रेम का ही प्याला बचा है, जो मैं सबको दे रहा हूँ। अपने तरुण मित्रों के सामने भी अब मैं यही प्याला पकड़े हुए हूँ....।"

उसके बाद का इतिहास साक्षी है कि देश ने तलवार के तत्त्वज्ञान को तलाक देनेवाले गांधी का साथ दिया। साम्राज्य-वाद की नींव हिली, भारत में लोकतंत्र की नींव पड़ी और संसार को मुक्ति का एक नया रास्ता मिला।

संसार आज बन्दूक की नली के तत्त्वज्ञान से और अधिक त्रस्त हुआ है। विनोबा संसार को वही प्रेम का प्याला पिलाकर बन्दूक के तत्त्वज्ञान को तलाक दिलाना चाहता है और देश में सच्चे स्वराज्य की स्थापना के लिए उसने नया रास्ता बताया है।

क्या हम वक्त को पहचानेंगे और महान कार्य में वक्त पर योग देंगे ?

गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति (राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी-समिति)
टंकलिया भवन, कुम्हीगरों का भैरु, जयपुर-३ राजस्थान द्वारा प्रसारित।

www.vinoba.in

आन्दोलन के समाचार

अ० भा० ग्रामस्वराज्य समिति का गठन

•तिरुपति (आन्ध्र प्रदेश) में २३ से २५ अप्रैल '६६ तक हुए सर्व सेवा संघ के अधिवेशन में आचार्य राममूर्ति के संयोजकत्व में ग्रामस्वराज्य समिति बनायी गयी है। नवगठित ग्रामस्वराज्य समिति में निम्नांकित सदस्य मनोनीत किये गये हैं :—सर्वश्री नरेन्द्र दुबे (मध्य प्रदेश), सिद्धराज ढड्ढा (राजस्थान), मनमोहन चौधरी (उड़ीसा), रवीन्द्र उपाध्याय (असम), ए० अर्वव्थान (तमिलनाडु), चण्डी प्रसाद भट्ट (उत्तरप्रदेश), लखनदेव प्रसाद (बिहार), सर्वनारायण दास (बिहार), लवणम् (आन्ध्र) और हरिवल्लभ परीख (गुजरात)।

उपर्युक्त समिति की प्रथम बैठक बिहार के किसी ग्रामीण क्षेत्र में १४, १५, १६, १७ अगस्त को रखी गयी है। इस बैठक में श्री जयप्रकाश नारायण और धीरेन्द्र मजूमदार भी उपस्थित रहनेवाले हैं। बिहार का राज्यदान सन्निकट है। आगे की व्यूह-रचना और ग्रामस्वराज्य के लिए नागरिक-शक्ति का संगठन और विकास में योगदान करने के लिए उपर्युक्त सदस्यों के अतिरिक्त कुछ प्रभावी, निष्ठावान एवं सर्वोदय-आन्दोलन के सक्रिय साथियों को, जिनकी पहली और अन्तिम निष्ठा ग्रामदानमूलक क्रान्ति में है, विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है। (सप्रेस)

मुंगेर के कार्यकर्ता संताल परगना पहुँचे

• बिहार के खादी-परिवार के वरिष्ठ मार्गदर्शक श्री ध्वजाबाबू ने सभी रचनात्मक संस्थाओं से यह मार्मिक अपील की है कि सभी लोग एकसाथ मिलकर "बिहारदान" के शेष काम को यथाशीघ्र पूरा करें।

उनकी अपील से प्रभावित होकर ग्रामस्वराज्य संघ, मुंगेर ने ६४ कार्यकर्ताओं का एक जत्था संताल परगना भेजने का तय किया है।

आगरा और मीरजापुर में ग्रामदान-अभियान

• आगरा जिले (उ० प्र०) की एत्मादपुर तहसील के ग्रामदान-अभियान-शिविर का उद्घाटन डा० दयानिधि पटनायक ने किया और शिविर की अध्यक्षता की अवकाशप्राप्त जज श्री कामतानाथ गुप्त ने। इस तहसील-स्तर के अभियान में ७५ खादी-कार्यकर्ता और ११८ शिक्षकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। २२ मई से २७ मई तक ६१ टोलियों में विभक्त होकर कार्यकर्ताओं ने पदयात्रा की। इस पदयात्रा में २७१ ग्रामदान प्राप्त हुए।

• मीरजापुर जिले में लालगंज हलिया विकास-क्षेत्र में चलाये गये ग्रामदान-अभियान में २६ ग्रामदान और प्राप्त हुए।

रामकुमार 'कमल' की पदयात्रा पुनः प्रारम्भ

• श्री रामकुमार 'कमल' गोरखपुर से पदयात्रा करते हुए ३० मई '६६ को सीतापुर पहुँचे। जिले के नागरिकों और खादी-संस्थाओं की ओर से उनका स्वागत किया गया। श्री गांधीआश्रम के व्यवस्थापक ने खबर दी है कि श्री 'कमल' की उपस्थिति में सर्वोदय मण्डल का गठन हुआ। जिला परिषद् के 'नेहरू हाल' में सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया, जिसमें श्री 'कमल' ने त्रिविध कार्यक्रम को आज की सामाजिक विषमता के निराकरण का एकमेव हल बताया।

मुरैना में प्रशिक्षण विद्यालय

• मुरैना (म० प्र०) में ६ जून से २७ जून '६६ तक "गांधी जन्म-शताब्दी, कार्यकर्ता प्रशिक्षण विद्यालय" का आयोजन जी० पी० पोस्टग्रेजुएट कालेज में किया गया है। इस विद्यालय का शुभारंभ प्रो० एम० एम० मेहता ने किया। इस प्रशिक्षण-क्रम में १५ छात्रों ने, जिनकी शैक्षिक योग्यता हायर सेकेण्डरी और बी० ए० स्तर की है, प्रवेश लिया है। जिलाधीश श्री आई० एस० राव, उदयभानु सिंह, और श्री कामेश्वर बहुगुणा ने छात्रों को अपने जीवन में निष्ठा और दृढ़ निश्चय का समन्वय करने की सीख दी।

कश्मीर में गांधी जन्म-शताब्दी शिविर

• विलम्ब से प्राप्त समाचार के अनुसार १५ से १६ मार्च '६६ तक गांधी स्मारक निधि, श्रीनगर (कश्मीर) द्वारा मलंगपुरा (जिला अनंतनाग) में गांधी जन्मशताब्दी कार्यकर्ता-शिविर हुआ, जिसमें ३५ शिविरार्थियों ने भाग लिया। ६० ग्रामसेवक और सुपरवाइजरों ने भी भाषणों और चर्चाओं में शामिल होकर ज्ञानार्जन किया। सर्वश्री प्यारे लाल, श्यामलाल सराफ, डा० रमेश कुमार शर्मा और आर० आर० परिहार ने शिविरार्थियों का मार्गदर्शन किया।

अ० भा० तरुण शांति-सेना शिविर

• वनवासी सेवाश्रम, गोविन्दपुर, जिला मीरजापुर (उत्तर प्रदेश) में गत २ जून से नौवां अखिल भारतीय तरुण शान्ति-सेना शिविर हो रहा है। विभिन्न प्रदेशों से आये शिविरार्थियों का ब्योरा इस प्रकार है—केरल ८, मैसूर ४, आंध्र २, तमिलनाडु २, मध्यप्रदेश ३, उत्तरप्रदेश ५, महाराष्ट्र २, गुजरात ६। शिविर का उद्घाटन श्री धीरेन्द्र मजूमदार के भाषण से हुआ। शिविरार्थी रोज सुबह ५ से ६ बजे तक शरीर-परिश्रम करते हैं।

अकोला में प्रखण्डदान की तैयारी

• अकोला तहसील के बार्शी-टाकली विकासखण्ड में १३ से २१ मई तक ३० गाँवों में ग्रामदान-पदयात्रा हुई। फलस्वरूप ३० ग्रामदान मिले। विनोबाजी के दौरे में ३३ ग्रामदान हो चुके थे। अब बाकी ३४ गाँवों का ग्रामदान होने पर यह प्रखण्डदान जाहिर हो सकेगा। पता चला कि यहाँ के सरपंच, ग्रामसेवक, शिक्षक, प्रमुख नागरिकों की १३ टोलियों में १२५ व्यक्तियों ने प्रचार-कार्य किया।

वार्षिक शुल्क : १० रु०; विदेश में २० रु०; या २५ शिलिंग या ३ डालर। एक प्रति : २० पैसे।
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इण्डियन प्रेस (प्रा०) लि० वाराणसी में मुद्रित।

www.vinoba.in

इस अंक में

ग्रामदानी गाँव, ग्रामदानी सरकार
सुखी गृहस्थी की कुंजी
हाथधुई गाँव का कायापलट
ग्रामदान से राज्यदान तक
राजस्थान में अकाल
कूड़े-कचरे से खाद बनायें
वैभव की फैलती दुनिया और टूटता-बिखरता आदमी

१६ जून, '६९
वर्ष ३, अंक २१] [१८ पैसे

अब किसे भेजें ? : ५ :

ग्रामदानी गाँव, ग्रामदानी सरकार

प्रश्न : वह कितना अच्छा दिन होगा जब हम लोग आज की दलबन्दी से मुक्त हो जायेंगे ? हम लोग इस दलबन्दी से बहुत घबड़ा गये हैं। क्या सचमुच वह दिन आयेगा ?

उत्तर : इसमें भी कोई शक है ? अब यह मानकर काम कीजिए कि वह दिन दूर नहीं है जब गाँव और सरकार, दोनों एक लाइन में आ जायेंगे।

प्रश्न : एक लाइन में कैसे आ जायेंगे ?

उत्तर : क्यों ? जब ग्रामदान के बाद गाँव में ग्रामदानी ग्रामसभा बनेगी और पटना-लखनऊ में ग्रामदानी सरकार बनेगी तो गाँव से राजधानी तक सीधी लाइन नहीं होगी ? एक लाइन में आकर दोनों ग्रामदान के धागे में बँध जायेंगे और ग्रामदान के बाद ग्रामस्वराज्य को आगे बढ़ाने में मिलकर काम करेंगे।

प्रश्न : लेकिन मेरे मन में एक डर है। जब सरकार ग्रामदानी हो जायगी तो हम लोगों की जैसी आदत है उसके मुताबिक सब यही चाहेंगे कि सरकार ही सब कुछ कर दे।

उत्तर : अगर ग्रामदान के बाद भी आप लोगों ने यही रुख रखा तो ग्रामस्वराज्य की बात बेकार है। ग्रामस्वराज्य का अर्थ ही यह है कि ग्रामदानी गाँव सरकार से मुक्त हो जाय, यानी गाँव का सारा प्रबन्ध ग्रामसभा के द्वारा हो। उधर दूसरी ओर सरकार दल से मुक्त हो जाय, और इस तरह काम करे जैसे वह ग्रामसभाओं को मजबूत करने के लिए है, तथा उन्हें हर तरह की सहायता और साधन पहुँचाने के लिए है।

प्रश्न : बहुत बड़ी जिम्मेदारी आयेगी गाँव के लोगों पर, और अगर सचमुच ग्रामसभाएँ बन गयीं और चलने लगीं तो गाँवों में सरकार का काम बहुत कम हो जायगा। क्या नहीं ?

उत्तर : हाँ, ग्रामस्वराज्य का यही मतलब है कि गाँव का अधिक-से-अधिक काम खुद गाँव के लोग आपस में मिलकर करें। स्वराज्य की जिम्मेदारी नहीं उठाइएगा तो स्वराज्य का सुख कैसे भोगिएगा ? आपका सुख इसीमें है कि गाँव के जीवन में गाँव का हर आदमी इज्जत के साथ गाँव के जीवन में शरीक हो सके। इसके अलावा आपमें यह शक्ति होनी चाहिए कि आप अपने अधिकारों की रक्षा कर सकें। अगर सरकार, भले ही वह ग्रामदानी सरकार हो, आपके अधिकारों में, स्वायत्तता में, हस्तक्षेप करती है या कोई गलत काम करती है, तो आपको साहस के साथ अपने अधिकारों की रक्षा के लिए मिलकर खड़ा हो जाना चाहिए। जो गाँव—गाँव ही क्यों, जो मनुष्य—अनीति और अन्याय से अपने अधिकारों की रक्षा नहीं कर सकता वह दूसरों की कृपा पर कितने दिन टिकेगा ?

प्रश्न : पक्की बात है ! यह मैं सोच ही रहा था कि क्या नेता लोग और अफसर लोग गाँववालों को अपने ढंग से काम करने देंगे ? आज तो हर काम में उनकी यही कोशिश रहती है कि ज्यादा-से-ज्यादा अधिकार वे अपने ही हाथ में रखें। ग्रामदानी सरकार के लोग भले ही कुछ दिन तक ऐसा न करें, लेकिन आगे चलकर अपने होते हुए भी वे यही करने लगेंगे।

उत्तर : हाँ, ऐसा होता है। इसलिए तो बार-बार कहा जा रहा है कि ग्रामस्वराज्य की असली शक्ति ग्रामसभा में है।

www.vinoba.in

प्रश्न : बात समझ में आ रही है। राजधानी में सरकार कैसे बनेगी, कैसे चलेगी, यह बहुत-कुछ निर्भर करता है इस बात पर कि ग्रामसभा कैसे बनती है, कैसे चलती है। लेकिन हालत यह है कि आज हम जिन्हें गाँव कहते हैं वे सचमुच गाँव नहीं रह गये हैं। वे गाँव इसी अर्थ में हैं कि पचीस-पचास घर एक जगह बसे हुए हैं। एकता नाम की चीज उनमें रह ही नहीं गयी, वे टूट गये हैं। जो कुछ बचा था उसे राजनीति चाट गयी।

उत्तर : आपका कहना सही है, फिर भी हम जहाँ हैं वहीं से आगे बढ़ना पड़ेगा। गाँव के लोगों को महसूस करना पड़ेगा कि वे एक हैं, और सबका एक ही हित है।

प्रश्न : यहीं से असली बात है। ग्रामदान के सिवाय दूसरा कोई भी नहीं कहता कि गाँव एक है। हर नेता, चाहे वह किसी पार्टी का हो और उसके हाथ में झण्डा चाहे जिस रंग का हो, हम लोगों से यही कहता है : 'गाँव की एकता कैसी ? मालिक-मजदूर एक कैसे होंगे ? ऊँच-नीच एक कैसे होंगे ? वे न एक हैं, न एक हो सकते हैं। कौन जीयेगा, कौन मरेगा, इसका निर्णय संघर्ष से होगा। संघर्ष होकर रहेगा। जीवन में संघर्ष के सिवाय और होता क्या है ? संघर्ष के बिना मुक्ति नहीं।'

उत्तर : आप लोगों को यह तय कर लेना चाहिए कि गाँव के लोग मुक्ति चाहते हैं या सिर्फ बदला ? संघर्ष से मुक्ति नहीं मिल सकती, नया समाज नहीं बन सकता। थोड़ा-बहुत बदले का सन्तोष भले ही मिल जाय। इन सारी बातों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। क्या आप जानते हैं कि मनुष्य चन्द्रमा से सिर्फ १० मील ही दूर रह गया है, और इस दूरी को भी तय करके जुलाई में वह चन्द्रलोक पर उतर जायगा ? क्या आप सोचते हैं कि चाँद पर, या मंगल पर, पहुँचने की यह दौड़-धूप क्यों है, और इन प्रयोगों पर कितना खर्च होता है ? अभी पिछली बार 'अपोलो-१०' की यात्रा में दस अरब रुपये खर्च हुए थे। एक यात्रा में अमेरिका ने उतना खर्च किया जितना भारत अपनी कुल सेना पर साल भर में खर्च करता है ! अमेरिका आसमान के प्रयोगों पर एक साल में लगभग ४० अरब रुपये खर्च करता है, और सेना से सम्बन्ध रखनेवाले प्रयोगों पर ६४ अरब ! शोध और विकास पर होनेवाले कुल खर्च का लगभग ७५ फीसदी इन्हीं दो मदों में लग जाता है। सोचिए, स्वास्थ्य, शिक्षण और कल्याण के प्रयोगों में सिर्फ ८ फीसदी। अणुशक्ति के प्रयोगों में १० फीसदी ! लोक-कल्याण के और आसमान के प्रयोगों के खर्च में कितना जबरदस्त अन्तर है ?

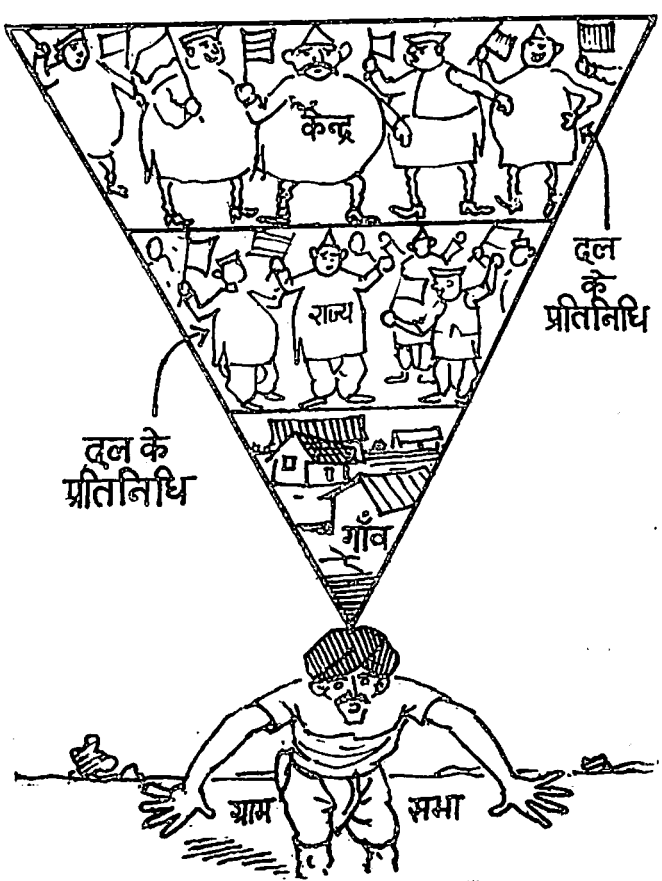

आज का लोकतंत्र : उलटा ढाँचा

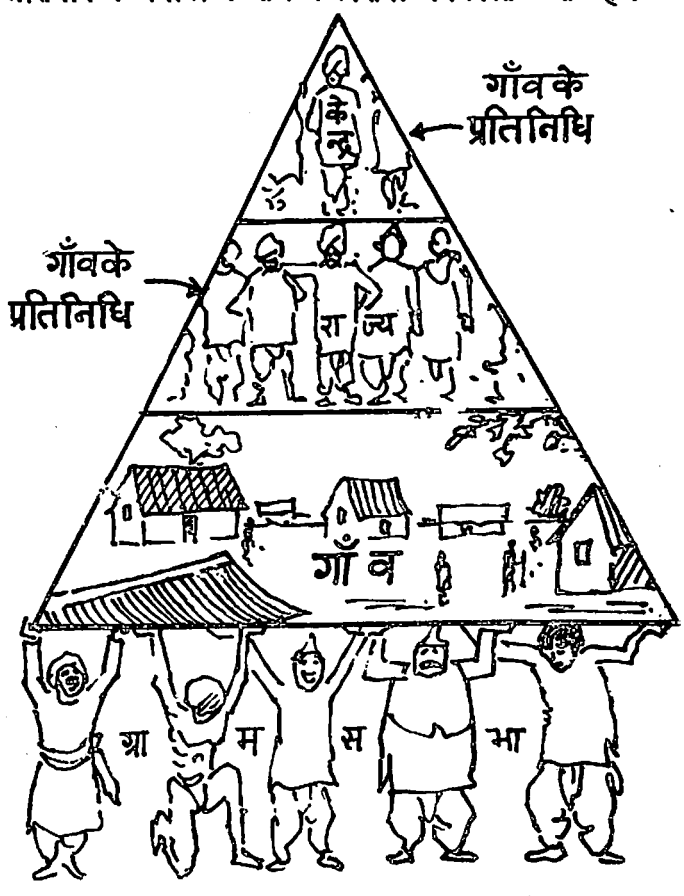

ग्रामस्वराज्य का लोकतंत्र : सीधा ढाँचा

सुखी गृहस्थी की कुंजी

जिस समय घर के आँगन में गाँव की स्त्रियाँ इकट्ठी होकर सोहर गाने और नाचने-कूदने के कार्यक्रम में तल्लीन थीं उस समय नीलिमा को उस दिन की बातों की याद आयी जिस दिन वह पहली बार इस घर की बहू बनकर आयी थी। करीब-करीब इसी तरह गाँव की स्त्रियों से आँगन खचाखच भर गया था।

द्वार-पूजा के समय बारात जब दरवाजे पर आती है तो गाँव के लोगों की, और विशेष रूप से स्त्रियों की, उत्सुकता यह जानने की होती है कि दूल्हा गोरा है या काला, सुन्दर है कि बदसूरत, और लड़की के हिसाब से ठीक है कि बेठीक! जब बहू अपनी ससुराल में पाँव रखती है तो गाँव की स्त्रियाँ उसके रूप-रंग, चाल-ढाल, शरीर की गठन और स्वभाव की जानकारी पाने के लिए अधीर रहती हैं। बहू की परीक्षा की पहली चीज मानी जाती है उसकी देह का रूप-रंग। बहू यदि गोरी है तो गाँव की सौ में निन्यानब्बे स्त्रियाँ उसे रूपवती मान लेती हैं। स्वस्थ और सुडौल देह भी बहुतों को प्रभावित करती है। किन्तु चेहरे की सुन्दरता को बहुत कम स्त्रियाँ समझ पाती हैं। बहू की निगाहें शर्मीली और झुकी हुई हों तो वह सुशील मानी जाती है। बहू की आँखें चंचल हों तो प्रायः स्त्रियाँ उसे घमंडी मान लेती हैं।

जिस दिन नीलिमा की पालकी पहले-पहल ससुराल के दरवाजे पर आकर लगी थी, उस दिन घर में ऐसी ही चहल-पहल थी। नीलिमा की काया साँवले रंग की थी। जो उसे देखता, कुछ देर में आँखें फेर लेता। नीलिमा का वश चलता तो वह धरती में समा जाती। जुबान से कुछ न कहते हुए भी सिर्फ नजरों द्वारा नीलिमा की जो उपेक्षा हो रही थी उसे वह बड़ी कठिनाई से झेल पा रही थी। उसकी देह की गठन आकर्षक थी। जो निगाहें उसके चेहरे से हटतीं वे उसकी देह पर कुछ देर के लिए जरूर रुक जाती थीं। उसे यह समझते देर न लगी कि उसके स्वस्थ शरीर का जादू सबसे ऊपर काम कर रहा है। मुँह-देखाई के बाद जाते समय बेकली ने पारबती से कहा था—"मैया, घर-गृहस्थी के लिए पतोह बड़ी सुघर है। रूप-रंग भी काटने-बराने लायक नहीं है।"

पारबती ने बेकली की बात काटते हुए उस दिन जो कुछ कहा था उसे नीलिमा जिन्दगी भर नहीं भूल सकती। पारबती ने न सिर्फ बेकली, बल्कि गाँव की सभी स्त्रियों को सुनाते हुए कहा था—"मनपसन्द रूप-रंग पाना किसीके बस की बात नहीं है। कुम्हार का कोई घड़ा पककर लाल हो जाता है तो कोई ज्यादा पककर काला भी हो जाता है। अब इसमें कोई घड़े को दोषी माने तो उसकी अकिल को क्या कहा जाय? जिसका तन गोरा है, उसका मन देवता जैसा है, यह कोई नहीं कह सकता। सुन्दरता का गोराई से कैसे सम्बन्ध जुड़ गया इसे भला कितने लोग जानते हैं? किसी भी स्त्री की सुन्दरता के असली दो ही अंग हैं—एक तो उसकी सुगठित देह और दूसरा उसका मनमोहक शील स्वभाव। स्त्री में यदि ये दोनों गुण नहीं हैं तो उसकी सोने जैसी काया भी व्यर्थ है।"

नीलिमा के झुके हुए चेहरे को अपने दोनों हाथों से उठाकर अपनी छाती से लगाते हुए पारबती ने कहा था—"दुलहिन, तू मेरे बेटे की बहू है, लेकिन मेरे लिए तो मेरी बेटी-जैसी ही है। तू नाहक अपना मन छोटा मत कर। दस लोग दस तरह की बातें कहेंगे। उन बातों में कुछ नहीं रखा है। असली चीज है मन। कहा भी है कि 'मन चंगा तो कठौती में गंगा।' जिस स्त्री का मन अच्छा है उसकी घर-गृहस्थी हमेशा सुख और शान्ति से बीतती है। मन अच्छा होने के लिए अच्छा स्वभाव चाहिए। अच्छे स्वभाव का मतलब है सबके साथ अच्छा बर्ताव। अच्छा बर्ताव ही सुखी गृहस्थी की कुञ्जी है। मुझे पूरा भरोसा है कि तेरे पास यह कुञ्जी है। जबतक यह कुञ्जी तेरे पास रहेगी तबतक तेरी गृहस्थी हरी-भरी और खुशहाल रहेगी।"

नीलिमा को अपनी छाती से लगाकर जब पारबती ये बातें कह रही थी, उस समय नीलिमा की आँखें नम हो गयी थीं। उसे पारबती के सीने में अपनी बिछुड़ी माँ की धड़कन सुनाई दे रही थी।

—त्रिशंकु

हाथधुई गाँव का कायापलट

www.vinoba.in

महाराष्ट्र में १५० जनसंख्या का हाथधुई नाम का एक छोटा-सा गाँव है। कई गाँवों की तरह यहाँ के लोग भी शराब और उसी तरह के व्यसनों के शिकार थे। हर साल शराब के कारण पुलिस को इस गाँव से हजार-पाँच सौ रुपये गाँववालों को देने पड़ते थे, इसके अलावा इज्जत भी खोनी पड़ती थी।

गाँव के पाँच तरुणों ने निश्चय किया कि यह दीन स्थिति शराब के कारण ही है, तो हमें शराब छोड़नी चाहिए। लेकिन आसानी से शराब छोड़ने को कोई तैयार नहीं होता था। बड़े लोगों को इन तरुणों ने बहुत समझाया। लेकिन वहाँ तो ऐसी भावना बनी थी कि देवी-देवता को शराब समर्पित न करने से रोग बढ़ेंगे, जानवर मरेंगे, फसल नहीं होगी, शेर गाय-बकरियों को ले जायेंगे! उनकी यह धारणा पीढ़ी-दर-पीढ़ी के संस्कारों के कारण पक्की बनी थी। बच्चे के जन्म होने पर भी शराब, मरने पर भी शराब का उपयोग होता! मुरदे के मुँह में शराब नहीं डालने से उसको मुक्ति नहीं मिलेगी, ऐसी भावना थी। फसल बोते समय शराब, काटते समय शराब, शादी में शराब, शुरू में, बीच में, और आखिर में भी शराब! ऐसे शराबी लोगों को शराब से मुक्त करना सामान्य पराक्रम की बात नहीं थी। इन पाँच तरुण लोगों ने निश्चय किया और साल भर प्रयत्न करते रहे। उनके प्रयत्नों से लोग शराब न पीने का शपथ लेने लगे और दो साल में तो पूरा गाँव ही शराब-मुक्त हो गया।

तरुणों को इन दो सालों में सबको समझाने में जी-तोड़ कोशिश करनी पड़ी। कभी-कभी तो उनकी जान का भी खतरा रहा। शराब के नशे में गाँववाले उनकी छाती पर बैठकर जबर्दस्ती उनको शराब पिलाने का प्रयत्न करते थे। इन सब संकटों का उन्होंने मुकाबिला किया और गाँव शराब-मुक्त हुआ। उनके यहाँ "कल्याण" धार्मिक मासिक पत्रिका आती थी। उसमें से प्रभु रामचन्द्रजी का चित्र निकालकर उसे फ्रेम में मढ़ा लिया। उसके बाद शपथ लेने का कार्यक्रम उस मूर्ति के सामने होता रहा। धीरे-धीरे गाँव में पुलिस का आना बन्द हुआ। लोग खुद शराब नहीं पीते, तो फिर पुलिस को कहाँ से पिलायें? जुर्माना, सजा आदि का सिलसिला बन्द हुआ। आलस्य कम हुआ, काम करने की आदत हुई। रोज गाँव के लिए दो घंटे परिश्रम होने लगा। एक साल में तीन सौ एकड़ जमीन में भेंड़ बनाने का काम पूरा कर लिया गया।

हाथधुई गाँव पड़ोस के टेंबला गाँव से जुड़ा हुआ है। वहाँ के स्कूल की इमारत तो खंडहर, टूटा-फूटा छप्परवाली जगह मात्र थी जिसमें केवल बकरियाँ रखी जाती थीं। न शिक्षक आता था और न लड़के ही आते थे। हाथधुई के लोग अपने गाँव में स्कूल चाहते थे, लेकिन पड़ोसी गाँव में स्कूल के होने के कारण हाथधुई गाँव के लिए अलग स्कूल मिलना असंभव था। सरकार तो जानती थी कि पड़ोस का स्कूल चलता है। आखिर में गाँववालों ने अपनी ग्रामस्वराज्य सहकारी सोसायटी बनायी। पंच लोगों ने वस्त्र, निवास, दवा, शिक्षण, रक्षण और न्याय की जिम्मेदारियाँ आपस में बाँट लीं और उस पर यथाशक्ति अमल करने की कोशिश की जा रही है। गाँव का सोया हुआ और छिपा हुआ सेवकत्व प्रकाश में आया है।

हनुमान सिंह नामक तरुण कार्यकर्ता ने गाँव का कारोबार सुव्यवस्थित चलाने की ओर ध्यान दिया है।

ग्रामदान के पहले गाँव साहूकार के कर्ज से लदा हुआ था। लेकिन अब साहूकार से कर्ज लेना बन्द हुआ और साहूकारी पंजे से गाँव मुक्त हुआ। ग्रामस्वराज्य सहकारी सोसायटी की ओर से सामान की खरीद-बिक्री होती है। इसके कारण यहाँ शोषण बन्द हुआ।

हाथधुई गाँववालों की वृत्ति और विचार में कैसा मूलगामी परिवर्तन हुआ है, इसका एक ही उदाहरण काफी होगा। "हमारा गाँव ग्रामदानी बना है, अब हम आपको रिश्वत बिलकुल नहीं देंगे।"—ऐसा कड़ा जवाब पुलिस को मिला। उसके कारण पुलिस नाराज हुई और एक आदमी को उसने लातों-मुक्कों, और डंडे से पीटा। जिसने इतना मार खाया उसने कार्यकर्त्ता को कहा तक नहीं। दूसरों की ओर से कार्यकर्त्ता को पता चला। कार्यकर्त्ता ने पुलिस से पूछताछ की। पुलिस ने पिटाई के आरोप से इन्कार किया। तब उस तरुण ने कहा—"हम कहते हैं न, कि ग्रामदान द्वारा मनुष्य का हृदय-परिवर्तन करेंगे। तब फिर हम पुलिस-अधिकारियों के पास किसलिए जायँ? मुझे उस पुलिस ने लातों-मुक्कों और डंडे से पीटा यह सही है, लेकिन इसे सजा मत दीजिए। कभी-न-कभी इसे अपनी गलती महसूस होगी ही।"

यह सारी घटना उस पुलिस के लिए नयी ही थी। अपराधी को सजा देना-दिलाना उसका धन्धा था, लेकिन ऊपर की घटना से उसके हृदय में करुणा और आँखों से आँसू बहने लगे। पुलिस ने क्षमा माँगी।

—सुमन बंब

ग्रामदान से राज्यदान तक

आज ग्रामदान की चर्चा गांव-गांव में होने लगी है। १८ अप्रैल सन् १९५१ को विनोबाजी ने भूदान-आन्दोलन शुरू किया था। उस आन्दोलन के सिलसिले में उन्होंने भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक गांव-गांव की पदयात्रा की। इस पदयात्रा के कारण भारत के गांवों का सही दर्शन उनको हुआ और गांव-वाले भी सन्त विनोबा के नाम से परिचित हो गये। भूदान-यात्रा सिलसिले में ही उत्तरप्रदेश में हमीरपुर जिले का मंगरौठ गांव भारत में पहला ग्रामदान हुआ और यहीं से ग्रामदान की शुरुआत हुई। अब तो पूरे बिहार के गांवों का ग्रामदान करीब-करीब पूरा होने जा रहा है। प्रान्तदान के लिए प्रान्त भर के ८५ प्रतिशत गांवों का ग्रामदान घोषित होना जरूरी है। ग्रामदान का मतलब है, गांव के लोगों द्वारा गांव में ग्रामस्वराज्य कायम करने के लिए किया गया सामूहिक-संकल्प। ग्रामस्वराज्य की दिशा में पहला कदम था आजादी हासिल करना और उसके बाद अब दूसरा कदम है गांववालों में अपनी व्यवस्था सम्भालने का पुरुषार्थ जगाना। यह तब हो सकता है, जब गांव के लोग चार बातें मान लें। १. ग्रामस्वराज्य-सभा बनाना, २. ग्रामकोष का संग्रह करना, ३. मालकियत किसी एक की नहीं, सारे गांव की करना, ४. बीघे में से एक कट्ठा गांव के भूमिहीनों को स्वेच्छा से दे देना। इस समय देश के १७ प्रदेशों में ग्रामदान आन्दोलन चल रहा है। ३१ मई '६९ तक सारे देश में १ लाख से अधिक ग्रामदान, ७२७ प्रखंडदान और १८ जिलादान हो गये हैं। प्रान्तदान के लिए बिहार, तमिलनाडु, उड़ीसा, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान के कार्यकर्ताओं ने गांधी-जन्म-शताब्दी (२ अक्तूबर '६९) तक संकल्प कर रखा है। और संकल्प की पूर्ति में अपने-अपने प्रदेशों में लगे भी हैं।

बिहार में विनोबाजी हैं, इसलिए वहां ग्रामदान का महातूफान चल रहा है। अक्तूबर '६८ तक उत्तर बिहार के जिलों का जिलादान हो गया था। उत्तर बिहार में सारन, चम्पारन, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सहरसा, और पूर्णिया जिले हैं। दक्षिण बिहार में पटना, मुंगेर, गया और धनबाद का जिलादान हो गया है। शाहाबाद, भागलपुर, संतालपरगना, पलामू, हजारीबाग, रांची और सिंहभूम जिलों के काफी गांवों का ग्रामदान हो चुका है।

बिहारदान के शेष काम को पूरा करने के लिए देश के कई भागों से चुने हुए कार्यकर्ता पहुँच गये हैं। ग्रामदान-पुष्टि का काम भी चल रहा है। अभी तक २,७८५ गांवों में ग्रामसभाओं का गठन हो चुका है। २,०३६ गांवों के कागजात ग्रामदान-पुष्टि के लिए तैयार किये जा चुके हैं।

प्रान्तदान के बाद गांव की व्यवस्था कैसे की जायगी और व्यवस्था का स्वरूप क्या होगा, इस पर विचार करने के लिए और व्यवस्था की पूर्वतैयारी के लिए हाजीपुर में उत्तरप्रदेश, बिहार और नेपाल के कुछ साथियों का एक शिविर हुआ, जिसमें ग्रामदान की कानूनी पुष्टि, ग्रामसभा के संगठन और संचालन, विकास, शान्तिसेना और दलमुक्त ग्राम-प्रतिनिधित्व के स्वरूप पर काफी गहराई से चर्चा हुई। ग्रामदान के आधार पर ग्रामस्वराज्य की इमारत तैयार करने के लिए कार्यकर्ताओं ने स्वेच्छा से संकल्प किया है।

बिहार का पड़ोसी प्रदेश उत्तरप्रदेश है। तूफान का प्रभाव यहां भी पड़ना स्वाभाविक था। इस उत्तरप्रदेश में कुल ५४ जिले हैं। बलिया में अखिल भारतीय सर्वोदय-सम्मेलन अप्रैल सन् १९६६ में हुआ। उसके पहले इस प्रदेश में सिर्फ १२३ ग्रामदान हुए थे। बलिया जिले में सम्मेलन की पूर्वतैयारी के लिए पदयात्रा की गयी तो २० ग्रामदान और मिले। उसके बाद तो ग्रामदान तूफान का वेग ही चल पड़ा और ३ जून सन् १९६८ को बलिया का जिलादान पूरा हो गया। इसके पहले ३१ मई सन् १९६८ को उत्तरकाशी का जिलादान घोषित हो जाने से दो जिलादान हो गये और कार्यकर्ताओं में नया जोश उभर आया। आज तो यहां पांच जिले जिलादान की मंजिल के करीब पहुँच गये हैं।

बलिया जिलादान का समारोह १० जुलाई '६८ को हुआ, जिसमें विनोबाजी को जिलादान समर्पित किया गया। इस अवसर पर आचार्य कृपालानी और जयप्रकाश नारायण भी थे। १५ जुलाई को विनोबाजी के सामने सब कार्यकर्ताओं ने प्रदेशदान का संकल्प किया। बस, फिर क्या था, कार्यकर्ता प्रखण्डदान के लिए प्रखण्ड और तहसील-स्तर के अभियान चलाने में जुट गये।

इस प्रदेश में हिमालय के अंचल में जो जिले हैं उनमें शराब की बहुत खपत होती है, जिसका बुरा असर गांव के जीवन पर है। इस शराब की बिक्री को बन्द कराने के लिए सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने धरने दिये और उत्तरप्रदेश सरकार को विवश होकर तीन दूकानदारों के लाइसेन्स रद्द कर देने पड़े। इसका सीधा असर ग्रामदान-आन्दोलन के लिए अनुकूल पड़ा है।

उत्तरप्रदेश का क्षेत्रफल १,१३,६५४ वर्गमील है। आबादी ७ करोड़, ३७ लाख, ४६ हजार, ४०१ है। कुल गाँव १ लाख, ११ हजार, ७४२ हैं। कुल प्रखण्ड ८७५ हैं। इनमें से १६,१८७ ग्रामदान और ९० प्रखण्डदान ३० अप्रैल '६९ तक हो चुके हैं।

तमिलनाडु में ग्रामदान हासिल करने का काम नवजवानों ने उठा लिया है। वहाँ तिरुनेलवेली, तिरुचि, मदुराई और रामनाड जिलों का जिलादान हो गया है। तंजौर जिले में जमीन्दारों और किसानों के बीच भूमिस्वामित्व को लेकर बड़ी दरार पड़ गया थी, जिसका शांतिपूर्ण हल तमिलनाडु के सर्वोदय-कार्यकर्ता खोज रहे हैं। यहाँ के लोकसेवक श्री शंकरलिंगम् जगन्नाथन् को सर्व सेवा संघ का अध्यक्ष सर्वसम्मति से बनाया गया है। १२,३८५ ग्रामदान और १२४ प्रखण्डदान अबतक इस प्रदेश में हुए हैं।

इसी प्रकार महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश में भी ग्रामदान आन्दोलन में कार्यकर्ता लगे हैं। मध्यप्रदेश में टीकमगढ़ और पश्चिम निमाड़ का जिलादान हो गया है और ५,०९९ ग्रामदान तथा २५ प्रखण्डदान हुए हैं। गांधी-जन्मशताब्दी की जिला-समितियों ने ग्रामदान-प्राप्ति का कार्यक्रम उठा लिया है। महाराष्ट्र सर्वोदय मण्डल द्वारा श्री जयप्रकाश नारायण की उपस्थिति में प्रान्तदान का संकल्प किया गया है। जहाँ-जहाँ प्रान्तदान के संकल्प हुए हैं वहाँ संकल्प-पूर्ति में सभी संस्थाओं का योगदान मिल रहा है।

—क० अ०

राजस्थान में अकाल

पिछले महीने मैंने राजस्थान के अकालग्रस्त पश्चिमी जिलों—जोधपुर, जैसलमेर और बाड़मेर—में भ्रमण किया और वहाँ की परिस्थिति देखी। राजस्थान का यह हिस्सा सबसे अधिक सूखा है। सामान्य तौर पर वर्ष में ६ से ८ इंच तक बारिश होती है, लेकिन प्रकृति की ऐसी लीला है कि ४-६ इंच बारिश भी २-३ बार में हो जाती है तो बाजरा आदि की अच्छी फसल हो जाती है। इसके अलावा जैसलमेर, बाड़मेर की तरफ 'सेवथ' नाम की घास खूब होती है, जिसके कारण गोपालन का धन्धा यहाँ व्यापक है। सामान्य तौर पर एक-एक परिवार के पास सौ-सौ, डेढ़-डेढ़ सौ गायें हैं। भेड़-पालन भी इस क्षेत्र का एक प्रमुख धन्धा है। आज की 'सभ्यता' से दूर होने के कारण यह इलाका शोषण का शिकार भी कम हुआ है। इन सब कारणों से अकाल के समय भी इस क्षेत्र के लोगों में दीनता नहीं आयी है। इस मुसीबत के समय भी उनकी आँखों में तेज और चेहरों पर मुस्कराहट है। शरीर सामान्य तौर पर अच्छे हैं, स्त्री-पुरुषों के बदन पर पर्याप्त कपड़े, गहने भी नजर आते हैं।

पर पिछले ४-६ वर्षों से इस क्षेत्र में बारिश कम होती गयी है। पिछले साल तो करीब-करीब बिल्कुल सूखा पड़ा। हम बीसों गाँवों में घूमे, सब जगह एक ही कहानी थी। लगभग दो-तिहाई से तीन-चौथाई तक गायें मर गयी हैं। ऐसा डर है कि इस क्षेत्र की आर्थिक स्थिति को इस अकाल से स्थायी खतरा पदा हो जायेगा। ऐसी विपत्ति के समय हमारे दया के काम भी अक्सर बिना सोचे-समझे होते हैं। विकास के बारे में हमारी कल्पनाएं कितनी गलत रही हैं, इसका प्रमाण तो पिछले २० वर्षों की योजनाओं से मिल ही चुका है। खतरा इस बात का है कि दया और विकास के हमारे कामों के कारण राजस्थान के इस पश्चिमी क्षेत्र की आजाद और सुखी प्रजा कहीं परावलम्बी और गुलाम न हो जाय!

(श्री सिद्धराज ढड्ढा की चिट्ठी से)

"ग्रामभावना" : "कम्पोस्ट"-विशेषांक

हिन्दी भाषा में "ग्रामभावना" नाम से एक पत्रिका हर महीने आश्रम पट्टीकल्याणा, जिला करनाल, हरियाणा से प्रकाशित होती है। इस पत्रिका के प्रधान सम्पादक श्री ओमप्रकाश त्रिखा हैं। अप्रैल-मई १९६९में इसका एक "कम्पोस्ट"-विशेषांक प्रकाशित हुआ। इसका सम्पादन श्री बनवारीलाल चौधरी ने किया है, जिन्हें खेती की शास्त्रीय-व्यावहारिक जानकारी है। भारतीय ग्रामीण किसानों की परिस्थिति से सम्पादक पूर्ण परिचित हैं, इसलिए इस अंक का सम्पादन बड़ी ही कुशलता से हुआ है। किसान जिस परिस्थिति में रहता है वह उसमें ही थोड़ी-बहुत सावधानी बरते तो अच्छी खाद बनाकर वह ज्यादा उत्पादन कर सकता है, और महंगे तथा पौधों एवं मिट्टी को नुकसान पहुँचानेवाले रासायनिक खादों के उपयोग से बच सकता है।

उसमें खाद की बरबादी, खाद के तत्त्व, उनकी उपयोगिता तथा खाद के बनाने की अनेक विधियों को विस्तार से समझाया गया है। जो भी जानकारी इसमें दी गयी है वह परीक्षणों और प्रयोगों तथा सम्पादक के निजी अनुभवों पर आधारित है।

हर प्रकार से यह "कम्पोस्ट"-विशेषांक ग्रामीण किसानों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। छपाई काफी सुन्दर है। हर किसान को यह अंक मँगाना चाहिए। इस अंक की कीमत २ रुपये है। वर्ष भर का चन्दा ६ रुपये है।

कूड़े-कचरे से खाद बनायें

गोबर और कचरे से खाद बनाना

हमारे देश के बहुत-से हिस्सों में आजकल किसानों का जो खाद तैयार करने का ढंग है, वह यह कि जितना भी कचरा व गोबर इकट्ठा होता है (जलाने के बाद जो कुछ बच रहता है), उसको वह एक बड़े गोल गड्ढे में, जो कि छः महीनों के लिए काफी होता है, जमा करता जाता है। छः महीने के बाद कचरे व गोबर को गड्ढे की जगह जमीन की सतह से ४-५ फीट ऊंचाई तक ढेर बनाता जाता है। इस तरीके में निम्नलिखित खास खराबियां हैं—

(क) जानवरों का मूत्र (पेशाब), जिसमें पौधों के खाद्य पदार्थ-नत्रजन (१–१½ प्रतिशत) गोबर के (½ प्रतिशत) बनिस्बत बहुत ज्यादा होता है, ठीक ढंग से इकट्ठा करके खाद के ढेर में नहीं डाला जाता है।

(ख) खेत में से जितनी भी फालतू वनस्पति इकट्ठी की जाती है, वह खाद बनाने के काम में नहीं ली जाती है।

(ग) उघड़े ढेरों में खाद बनाने का तरीका गलत है। उससे वह गर्मियों में बहुत जल्दी सूख जाता है, ठीक प्रकार से सड़ता नहीं और नत्रजन का बहुत-सा हिस्सा हवा में उड़ जाता है। वर्षा के मौसम में पौधों के काम आने योग्य नत्रजन का हिस्सा तथा सेन्द्रिय पदार्थ (हुमस) का अधिकांश जमीन में धुलकर बेकार हो जाता है। अन्त में खराब किस्म की थोड़ी-सी खाद मिलती है।

आजकल गांवों में जो खाद बनती है, उसमें नत्रजन केवल आधे से पौन प्रतिशत होता है, जब कि सुधरे हुए तरीके से बनाने से नत्रजन का डेढ़ से दो प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है। इसके लिए खास आवश्यकता इस बात की है कि—

(१) ढेर को तेजी से सूखने से रोका जाय, और

(२) जितना भी हो सके, मूत्र इकट्ठा करके काम में लिया जाय। सब कचरे को जानवरों के बाड़े में, जहां पर मूत्र अक्सर जमा होता है, बिछाकर मूत्र का संग्रह किया जा सकता है। वास्तव में जितना भी कूड़ा-कचरा हो, उसको खाद के ढेर में डालने से पहले मूत्र को सोखने के काम में लेना चाहिए।

लेखक के अनेक प्रयोगों के फलस्वरूप निम्नलिखित तरीका खाद बनाने के लिए ठीक पाया गया है।

खाइयों से खाद बनाना

गर्मी के मौसम में खाइयों में खाद बनाना अच्छा रहता है, क्योंकि खाइयों में जमीन पर के ढेरों की बनिस्बत तरी या नमी की और नत्रजन की रक्षा भली प्रकार होती है। लेकिन जहां पर पानी की सतह ज्यादा नीची न हो तथा अतिवृष्टि के समय में खाइयां काम में नहीं आ सकती हों, वहां जमीन के ऊपर ही किये हुए ढेर काम में लाये जा सकते हैं।

खाइयाँ—खाइयां ऐसे नाप की होनी चाहिए जो जानवरों के बाड़े का, दो-तीन महिने का गोबर, कचरा वगैरा भरने के लिए काफी हो। खाई की ठीक नाप तो जानवरों की संख्या, खराब तथा बिना खाये हुए चारे का परिमाण तथा खेत से मिलनेवाले कचरे के परिमाण पर निर्भर रहता है। सुविधा के लिए यहां कुछ नाप दिये जाते हैं।

जानवरों की संख्या	लम्बाई	चौड़ाई	गहराई
२–५	२० फीट	३ फीट	२॥ फीट
६–१०	२५ फीट	३॥ फीट	३ फीट
११–२०	३० फीट	४ फीट	३॥ फीट
२० से ऊपर	३० फीट	५ फीट	३॥ फीट

खाइयों के किनारे एकदम सीधे नहीं होने चाहिए, परन्तु ऊपर से नीचे की ओर ६ इञ्च का ढलाव होना चाहिए। खाई के पेंदे में भी किसी एक सिरे की ओर एक फुट का ढलाव होना चाहिए, जिससे बरसात का पानी, यदि भरा हो तो, गहरेवाले सिरे पर इकट्ठा हो जाय और खाई में खाद को न बिगाड़े। खाइयां जानवरों के बाड़े के पास ही तथा कुछ ऊंची जमीन पर होनी चाहिए। खाइयों के किनारे को मेड़ से ऊंचा उठाकर चारों तरफ ढलान कर देना चाहिए, जिसमें बरसात का पानी बाहर से अन्दर न आने पाये। यदि जमीन बहुत ढोली न हो तो खाई को ईंटों से जड़ने की आवश्यकता नहीं है। एक मामूली किसान के लिए तीन-चार खाइयों की आवश्यकता पड़ेगी, ताकि जबतक सब खाई भरी जायें उस वक्त पहली खाई की खाद खेत में देने योग्य हो जाय और वह खाई फिर भरने के लिए खाली हो जाय। (क्रमशः)

—बनवारीलाल चौधरी

वैभव की फैलती दुनिया और टूटता-बिखरता आदमी—३

www.vinoba.in

एक जमाना था जब गाँव का हर आदमी अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए गाँव और पड़ोसी गाँवों के दूसरे लोगों से जुड़ा हुआ था। भारत में गाँवों की जमीन की रचना ऐसी थी कि हर आदमी गाँव की जमीन के ताने-बाने की तरह एक-दूसरे से गुथा हुआ था। पेट भरने के लिए खेती और उद्योग-धन्धों से लेकर शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक सम्बन्धों तक के लिए शादी, परिवार और पड़ोस के हर आयोजन में समाज का सहयोग और साथ जरूरी था।

लेकिन सुख की तलाश में आदमी के दिमाग ने विज्ञान की शक्ति खोज ली और उस शक्ति के आधार पर ऐसी मशीनों को तैयार कर लिया, जिन मशीनों ने आदमी के जीवन के लिए आदमी के सहयोग की आवश्यकता को घटा दिया। मशीन आदमी की जगह लेने लगी। यह सिलसिला भारत में सौभाग्य से अभी काफी पिछड़े रूप में है, लेकिन हमने दुनिया के जिन बड़े देशों और उनके महानगरों का जिक्र पहले किया है, वहाँ मशीन ने मनुष्य की जरूरत को लगभग समाप्त ही कर दिया है। मनुष्य की जरूरत कहीं है भी तो बहुत थोड़ी-सी। सारा काम मशीनें करती हैं, आदमी का काम है बटन दबाना या इसी प्रकार की कोई ड्यूटी करना। इन भीमकाय मशीनों के इर्द-गिर्द मनुष्यों की जो भीड़ इकट्ठी होती जा रही है, उनमें आपसी सम्बन्ध नहीं के बराबर होते हैं। जरूरत ही नहीं पड़ती, आदमी को आदमी की! सारा काम मशीनें कर देती हैं, यहाँ तक कि आदमी का मनोरंजन भी कर देती हैं—सिनेमा, टेलीविज़न, रेडियो के रूप में। अब तो एक ही जरूरत है मनुष्य की जिसे मशीनें पूरी नहीं कर पातीं और वह है स्त्री-पुरुष के मैथुन-सम्बन्ध की। इसके लिए आदमी को आदमी की जरूरत है। लेकिन मैथुन-सम्बन्ध अपने-आप में पूर्ण चीज नहीं है, वह तो मनुष्य की मनुष्य से व्यापक सन्दर्भ में जुड़ने की एक प्रेरणा है। लेकिन आज यह प्रेरणा संकुचित हो गयी है। पुरुष को स्त्री की, स्त्री को पुरुष की जरूरत मुख्य रूप से इस उन्माद को समाधान देने के लिए रह गयी है, परिणामस्वरूप जीवन में कोई स्थिरता और सन्तुलन नहीं आ पाता। स्त्री-पुरुष के बीच मानवीय भावनात्मक सम्बन्ध और प्रेम की गहरी अनुभूति का विकास नहीं हो पाता।

मनुष्य के साथ मनुष्य के जुड़ने और जुड़े रहने की जरूरत ही कम होते-होते समाप्ति की ओर जा रही है, इसलिए बड़े संयुक्त परिवार बनते नहीं, जो बने हैं, वे तेजी से टूट रहे हैं।

आज का विज्ञान और उसकी तकनीक भस्मासुर की कहानी की याद दिलाती है। मनुष्य ने अपनी सुख-सुविधा के लिए विज्ञान-रूपी भस्मासुर पैदा किया और अब वह मनुष्य को ही भस्म कर देना चाहता है। विज्ञान की शक्ति से विकसित भीमकाय मशीनें मनुष्य को कई तरह से नेस्तनाबूद करने पर तुली हुई दिखाई देती हैं। मनुष्य जीविका के लिए इन मशीनों के इर्द-गिर्द इकट्ठा होता है। मशीन से जुड़ता है, लेकिन खुद मनुष्य के सम्बन्ध से टूटता है। खेतिहर जिन्दगी में वह पुश्त-दर-पुश्त एक क्षेत्र में परिचित लोगों के बीच रहता आया था, अब दुनिया के इस कोने से उस कोने की खाक छानता फिरता है।

मनुष्य से मनुष्य जुड़ता है, तो परस्पर का विश्वास घना होता है, दृढ़ होता है, टूटता है तो अविश्वास बढ़ता है और एक-दूसरे से भय बढ़ता है। आज यह भय मनुष्य-मनुष्य के बीच इतना अधिक बढ़ गया है कि जिस आदमी की गर्दन में एक मामूली रस्सी का फन्दा डालकर उसे खत्म किया जा सकता है उसी आदमी के डर के मारे अणु और परमाणु बमों के ढेर लगे हुए हैं।

कुल मिलाकर मशीन मनुष्य को नचा रही है। अपनी मर्जी से, इसकी भयंकरता से और इस मजबूरी की जिन्दगी से घबड़ाकर मनुष्य शराब के नशे में डूबना चाहता है, मैथुन के पशुवत् उन्माद में खोना चाहता है और बदले में उसको शान्ति नहीं मिलती, मिलते हैं भयंकर शारीरिक और मानसिक रोग! आदमी दिनोंदिन पागल होता जा रहा है। यह दर्दनाक कहानी है उन विकसित देशों की, सभ्य महानगरों की, जिस ओर भारत जैसे पिछड़े देश बढ़ना चाहते हैं, और उन देशों से मदद की भीख माँगकर बढ़ भी रहे हैं। इसीलिए भारत के भी महानगरों—कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, दिल्ली आदि में आदमी कीड़ों की-सी जिन्दगी जीने लगा है, शराब और "मैथुन" के पीछे पागल बनकर दौड़ने लगा है, परिणामतः परिवार टूट रहे हैं, खुद आदमी भीतर से बुरी तरह टूट रहा है और इन महानगरों का यह रोग छूत की बीमारी बनकर शहरों और कस्बों से होते हुए गाँवों तक फैलता जा रहा है। अगर कोशिश करके इस महामारी को रोका न गया तो नगर-बाजार अपने वैभव के साथ फैलते जायेंगे, आदमी टूटता जायगा और एक दिन बचा-खुचा भारत का जीवन भी समाप्त हो जायगा। (क्रमशः)

'गाँव की बात' : वार्षिक चन्दा : चार रुपये, एक प्रति : अठारह पैसे
सम्पादक : राममूर्ति : सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी-१